P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर के संबंध में उनकी व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन

दिलीप कुमार झा
प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
प्रज्ञा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,
बहादुरगढ़, हरियाणा, भारत

सारांश

मानव परमात्मा की अनुपम कृति है। यह अनुपम कृति निरन्तर विकासशील होने के साथ–साथ भौतिकता की पराकाष्ठा को छूने के लिए उद्धृत रहता है। जो मानव को भौतिक रूप से समृद्ध एवं खुशहाल तो अवश्य करेगा परन्तु आध्यात्मिक पक्ष, समाज के आदर्श से विमुख कर रहा है। यही कारण है कि ईश्वर की सर्वोत्तम कृति मानव आज संत्रस्त दिखाई पड़ रहा है। व्यक्ति हताशा, कुण्ठा, निराशा एवं व्यावसायिक दुश्चिन्तता की मानसिकता से ग्रस्त है। हमारा रोजगार जीविकोपार्जन का माध्यम मात्र ही नहीं अपितु यही समाज में हमारी भूमिका को निर्धारित करता है।

मुख्य शब्द : बौद्धिक स्तर, व्यावसायिक रूचि, छात्र एवं छात्रा, उच्चत्तर माध्यचिक विद्यालय।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जाति के विकास के लिए सर्वोत्तम साधन है इसके अनेकानेक गुणों के कारण ही इसे कामधेनु की संज्ञा से अभिहित किया गया है। शिक्षा के अनेक कार्यों में से एक प्रमुख कार्य मानव का सर्वांगीण विकास करके आत्मनिर्भरता प्रदान करना है। आत्मनिर्भरता के लिए रोजगार परक शिक्षा आवश्यक है। इसके लिए आवश्यक है कि आधुनिक शिक्षा का स्वरूप केवल उपाधियों में हीं परिलक्षित नहीं हो, क्योंकि बढ़ती जनसंख्या और बेरोजगारी की समस्या के समाधान में ये उपाधियाँ पूर्ण सक्षम नहीं हैं। अतः हस्तकला एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान से युक्त जीवनोपयोगी और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने वाली शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। व्यक्ति को आत्मनिर्भरता उपयुक्त जीविका के द्वारा प्राप्त होती है।

शिक्षा स्वयं रोजगार या आजीविका पैदा नहीं करती चाहे वह सामान्य शिक्षा हो अथवा व्यावसायिक शिक्षा। व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को राजगार और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में अथवा स्वतंत्र रूप से आजिविका अर्जित करने में सहायता करती है। इससे व्यक्ति स्वाध्याय, स्वानुभव, और अपनें कौशल से उच्चतम उपाधियाँ प्राप्त करनें में समर्थ होता है। आजीविका मानव मात्र की मूलभूत आवश्यकता है। आजीविका अथवा रोजगार के लिए व्यक्ति में व्यवसायिक दृष्टिकोण का होना आवश्यक है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने व्यवसायात्मिका बुद्धिः कहकर कदाचित यही संकेत किया है।

हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था लार्ड मैकाले की शिक्षा व्यवस्था पर आधारित है। इसमें अन्य दोषों के अलावा एक यह दोष भी है कि यह शिक्षा को व्यावसायिक दृष्टिकोण देने में विफल रही है। देश के औद्योगीकरण से शिक्षा का कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है। फलतः शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी आज शिक्षित बेरोजगारों की संख्या विस्फोटक रूप से बढ़ रही है। शिक्षा युवकों में आत्मविश्वास पैदा नहीं कर पा रही है।

इन सभी समस्याओं का एक ही निदान है कि प्रारंभ से ही छात्रों में व्यावसायिक दृष्टिकोण और व्यवसायिक रूचि का विकास किया जाय ओर निम्न माध्यमिक स्तर अर्थात् कक्षा आठवीं से ही उनकी रूचियों के अनुसार उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति और सामाजिक उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए समुचित निर्देशन की व्यवस्था की जाय। उचित निर्देशन और परामर्श से छात्रों में स्वयं के लिए अवसर पहचानने और अवसर पहचानकर उसका सर्वोत्तम उपयोग करने की योग्यता विकसित होगी।

अंततः वे सर्वोत्तम अवसर और आजीविका प्राप्त करके खुशहाल जीवन प्राप्त कर सकेंगे। अतः छात्रों की भविष्य प्रगति और विकास के लिए उसमें उचित व्यवसायिक दृष्टिकोण और रूचि का विकास तथा सम्प्रति इस विकास के लिए महत्त्व अत्यन्त बढ़ गया है। गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा का मूल उद्देश्य था

– युवकों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करके उसमें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता पैदा किया जाय।

अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा का व्यक्ति और राष्ट्र की उन्नति में अन्यतम स्थान है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति इच्छित वस्तु या व्यवसाय को प्राप्त करता है। इच्छित व्यवसाय की प्राप्ति के लिए व्यक्ति की व्यावसायिक रूचि, उसका विकास, व्यवसाय चयन एवं प्रशिक्षण और समुचित बुद्धि का होना आवश्यक हैं व्यक्ति की व्यावसायिक सफलता एवं आत्मसन्तुष्टि व्यवसायों के उचित चयन उच्च बौद्धिकता से ही संभव है।

व्यवसाय चयन में व्यक्ति की सामाजिक आर्थिक शैक्षिक स्थितियों के साथ–साथ व्यावसायिक रूचियों का उत्यन्त प्रभाव पड़ता है। समुचित व्यवसाय चयन और व्यावसायिक रूचियों का विकास व्यक्ति की विभिन्न परिस्थितियों के अनुकूल बुद्धि पर निर्भर करता है। इसके लिए व्यक्ति को प्रारंभ से ही बौद्धिक दृष्टि से उन्नत बनाने की चेष्टा करनी चाहिए।

माध्यमिक एवं उच्चतरमाध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राएं किशोरावस्था में होती हैं। अपने भविष्य को सुखी और आत्मनिर्भर बनानें के लिए वे अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करते हैं, योजनाएँ बनाते हैं। अपनी उन योजनाओं को पूरा करनें की आतुरता, उचितानुचित निर्णय लेने की व्यग्रता तथा अपनें अन्य मानसिक द्वन्दों को सुलझानें का प्रयास व्यक्ति अपनें गुरूजनों, इष्टमित्रों और माता–पिता से सलाह–परामर्श के बाद करता है। इस काल में व्यक्ति के सामनें जो मुख्य समस्याएँ होती है। उनमें से उपर्युक्त विषयों का चयन करना और स्वयं के अनुकूल व्यवसाय या व्यावसायिक पाठ्यक्रम का चुनाव करना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और भविष्य की दिशा निर्धारित करनें वाली समस्या है।

शिक्षा प्राप्त करनें के बाद उचित उद्यम या व्यवसाय की प्राप्ति की निश्चित्तता के लिए आवश्यक होता है कि विषयों का चुनाव सही ढंग से किया जाय। यद्यपि छात्र–छात्राएँ अपने विषयों और व्यवसायों का चयन काफी सोच–समझकर करते हैं, तथापि प्रायः कतिपय ऐसे कारणों से यह चयन अनुपयुक्त प्रतीत होता है जो सामान्य तौर पर हमारे समाज में विद्यमान होते हैं।

1. आधुनिक और भौतिकता की अंधीदौड़ में छात्र–छात्राएँ आत्म सन्तोष की अपेक्षा अर्थोपार्जन को अपने व्यवसाय चयन का आधार बनाते हैं।
2. माता–पिता की उच्चाकांक्षा के कारण छात्र गलत विषय और व्यवसाय का चयन करते हैं। और अपने मार्ग से भटककर असफलता और निराशा प्राप्त करते हैं।
3. पारिवारिक सामाजिक परिवेश और पारिवारिक व्यवसाय के कारण भी छात्र अनिच्छित व्यवसायों का चुनाव करते हैं।
4. अपने रूचियों के अनुकूल विषयों तथा व्यवसायों पे प्रवेश नहीं मिलनें के कारण छात्र–छात्राएँ अनुपयुक्त विषयों तथा व्यवसायों का चयन करते हैं।
5. विषय की सीमाएँ तथा अपने पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक आर्थिक स्थितियों की वास्तविकता को जानें बिना ही छात्र गलत विषयों और व्यवसायों का चयन करते हैं।
6. अपनी स्वयं की योग्यता, क्षमता और अपने वास्तविक लक्ष्य को नहीं जाननें के कारण भी छात्र–छात्राएँ उपयुक्त व्यवसायों का चयन नहीं कर पाते हैं।
7. अपने चयनित विषय की अपेक्षित सूचनाओं उपलब्ध अवसरों की जानकारी और समुचित निर्देशन के अभाव में भी छात्र गलत विषय और व्यवसाय का चयन कर लेते हैं।

उपर्युक्त विषयों का चयन और व्यवसाय मे प्रवेश के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि छात्र अपने पक्षों पर उचित और वास्तविक रूप में विचार करनें के बाद उसमें प्रवेश लें। असावधानीवश लिए गए कोई भी निर्णय भविष्य को समस्याग्रस्त और जटिल बना देते हैं। शिक्षित बेरोजगारों की दिनानुदिन बढ़ती भीड़, आवश्यकताएँ, उच्च सुविधापूर्ण जीवन की कामना और सीमित होते रोजगार के अवसरों के कारण छात्रों के सम्मुख अनेक समस्याएँ उपस्थित होती हैं। अपनी रूचियों के प्रतिकूल व्यवसाय चयन असन्तोष और असफलता को जन्म देती है। इसमें उनमें कुंठा, निराशा और भग्नाशा पैदा होती है। यही वर्तमान समाज में व्याप्त तनाव और आपराधिक गतिविधियों का भी कारण है। इन सारी समस्याओं के मूल में दो प्रमुख कारण हैं :–

(क) व्यक्ति द्वारा अपनी व्यावसायिक रूचियों और सम्बद्ध परिस्थितियों के अनुकूल व्यवसाय चयन की समस्या।

(ख) व्यक्ति की परिस्थितियों और चयनित व्यवसायों के अनुसार बौद्धिक शक्ति का अभाव।

कार्य के प्रति रूचि या दिलचस्पी व्यक्ति के स्वाभाविक विकास में सहायक होती है। अरूचिपूर्वक किए गए कार्यों से ऐसा संभव नहीं है। व्यक्ति के आत्मसन्तोष, कार्यसन्तुष्टि और सुख शान्ति के लिए यह रूचि अवश्य भी है चाहे वह व्यावसायिक रूचि हो या साहित्यिक सामाजिक या कोई अन्य।

दूसरी ओर बौद्धिक शक्ति का व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है, तथा किसी भी व्यावसायिक सफलता के लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य है। अतः आजीविका या व्यवसाय के चयन के समय उस व्यक्ति के बुद्धि का मूल्यांकनों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

दूसरी ओर जब कोई ऐसी आजीविका में प्रवेश करता है। जो निश्चित रूप से उसके बुद्धि से निम्न है तो उसे सामान्यतः न तो कार्य से ही सन्तोष प्राप्त होता है और न साहचर्य से ही। निस्सन्देह ''टर्मन'' ने कई वर्ष पूर्व यह पूर्वकथन किया था। कि अन्ततोगत्वा प्रत्येक प्रमुख आजीविका में सफलता के लिए आवश्यक अल्पतम बुद्धिलब्धि का निर्धारण अनुसंधान ही करेगा। वह अभीष्ट लक्ष्य अभी प्राप्त नहीं हो सका है।

बुद्धि द्वारा व्यक्ति का वातावरण के साथ समायोजन होता है इससे उसमें रचनात्मकता और आत्मविश्वास का विकास होता है। छात्र–छात्राएँ इस स्तर पर समाज और राष्ट्र की औद्योगिक और अन्य क्षेत्रों के बहुमुखी विकास में अपनी योग्यताओं, क्षमताओं तथा कौशलों का प्रयोग करके राष्ट्र की प्रगति का साधक बन

सकें। इसके लिए व्यक्ति का समुचित स्वाभाविक विकास और समुचित बौद्धिक शक्ति का होना आवश्यक है।

इस प्रकार ज्वलन्त प्रश्नों का आज छात्रों और शिक्षकों को सामना करना पड़ता है। इन प्रश्नों के निदान से जो बाते प्रत्यक्ष रूप से सम्बद्ध हैं – ''व्यावसायिक रूचि और बुद्धि'' उनमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण और सामयिक है। अतः शोधकर्ता ने इसके सामयिक और दूरगामी महत्त्व को देखते हुए अध्ययन हेतु प्रस्तुत विषय का चयन किया गया।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का शीर्षक ''उच्चतर माध्यमिक स्तर विद्यालयों के छात्रों की बौद्धिक स्तर के सम्बन्ध में उनकी व्यावसायिक रूचि का अध्ययन'' है।

पारिभाषिक शब्दावली

बुद्धि

''बुद्धि'' से अभिप्राय ''डॉ0 एस0 एस0 जलोटा'' द्वारा निर्मित प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांक से है।

व्यावसायिक रूचि

व्यावसायिक रूचि से तात्पर्य ''डॉ0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित'' ''व्यवसायिक रूचि प्रपत्र'' प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांक से है।

लिंग (छात्र एवं छात्रा)

छात्र एवं छात्रा से अभिप्राय चयनित विद्यालय के ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने वाला छात्र व छात्राओं से है।

शोधकार्य के उद्देश्य

कोई भी कार्य छोटा हो या बड़ा सभी का एक निश्चित उद्देश्य होता है, बिना निश्चित उद्देय के कार्य सही लक्ष्य को, सुचारू रूप से प्राप्त नहीं कर सकता कार्य का निश्चित उद्देश्य उसे सही दिशा प्रदान करना है। एक प्रसिद्ध उक्ति है – ''प्रयोजनमनुदिश्य न मन्दोपि प्रवर्तते''।

अर्थात् कोई मन्द बुद्धि भी बिना प्रयोजन या निरूद्देश्य किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता । फिर शोधकार्य जैसे सार्थक और उपयोगी कार्य निरूद्देश्य नहीं हो सकता अतः शोधकार्य को सही दिशा और दशा प्रदान करने के लिए इस अध्ययन के कुछ उद्देश्य निश्चित किए गए हैं। जो निम्नांकित हैं :–

1. बदलते परिवेश में उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि ज्ञात करना है।
2. बालक और बालिकाओं की व्यावसायिक रूचि में समानता और असमानता ज्ञात करना।
3. व्यावसायिक रूचियों की विकास में बुद्धि की भूमिका या उसके महत्त्व का पता लगाना।

शोधकार्य का सीमाड़्क्न

प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित जो सीमा निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है –

1. सम्पूर्ण दिल्ली के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के स्थान पर दक्षिणी दिल्ली स्थिति विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।
2. सम्पूर्ण विद्यालयों के स्थान पर केवल 20 विद्यालयों का चयन किया गया।
3. सभी कक्षा के स्थान पर केवल ग्यारहवीं कक्षा के छात्र–छात्राओं को सम्मिलिति किया गया।
4. न्यादर्श के रूप में केवल 200 छात्र–छात्राओं के सम्मिलिति किया गया।

साहित्यावलोकन

डी. श्रीवास्तव– (2000) रा0 वि0 विद्यालय, में ''बौद्धिक दृष्टि से व्यवसायिक रूचि'' नामक अध्ययन में पाया कि जो छात्र उच्चबुद्धिलब्धि के हैं वे वैज्ञानिक, प्रशासनिक क्षेत्र का चयन करते हैं तथा बुद्धि का व्यवसायिक रूचि के साथ सहसंबंध होता है। इस सम्बद्ध साहित्य के सर्वेक्षण से एक बात यह उभर कर सामने आइ है कि इन सभी में व्यवसायिक रूचियों के विभिन्न पक्षों का अनेक सन्दर्भों में अध्ययन किया है लेकिन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर बौद्धिक दृष्टि से छात्रों के व्यवसायिक रूचियों का अध्ययन ''जैसे विषय पर शोधकार्य नहीं हुए है, जो ज्वलन्त तथा सामयिक विषय भी है। इसी को दृष्टि में रखते हुए शोधकर्त्ता ने इस विषय को अपने शोध कार्य के लिए चयन किया।

निशा शर्मा – (2000) ने बौद्धिक योग्यता के सन्दर्भ में केन्द्रीय विद्यालय की कक्षा 10 के छात्रों पर अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि सृजनशीलता, निम्नसृजनशीलता तथा प्रतिभाशाली छात्रों की रूचियों में भिन्नता होती है। उच्च बुद्धि वाले छात्रों की रूचि भौतिक, साहित्य तथा मानविकी में अकिध रही, जबकी निम्नसृजनशील छात्रों की रूचियाँ संगीत में।

बी. गौतमी – (2004) ने कक्षा 8 और 10 के छात्रों की शैक्षिक और व्यावसायिक अभिरूचियों का अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि छात्रों की शैक्षिक अभिरूचियों में सहसम्बन्ध होता है, ग्रामीण तथा शहरी छात्रों की प्राथमिकता क्षेत्र में समानता होती है। जबकि छात्र–छात्राओं में दोनों प्रकार की रूचियों में पर्याप्त अन्तर पाया जाता है।

ए.के. जावेद – (2007) ने वाणिज्य और विज्ञान के छात्रों की व्यावसायिक रूचियों का समस्यात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि ग्रामीण पृष्ठभूमि के छात्र कृषि आधारित व्यवसाय में कम रूचि रखते हैं, तथा कला और वाणिज्य के छात्रों की रूचि शारीरिक श्रम की अपेक्षा प्रशासनिक और अनुनयात्मक कार्यों जैसे WHITE COLOUR JOB में होती है।

एस. मोहन एवं एन. गुप्ता – (2011) ने व्यावसायिक रूचियों से सम्बद्ध–कारकों का अध्ययन करके जिन महत्वपूर्ण कारकों (रूचि कारकों) को प्राप्त किया उनमें से रूचि, प्रेरणा, व्यक्तिगत चिन्तन, मूल्य आत्म प्रत्यय स्तर, कृत्य परिपक्वता तथा भावी अध्ययन संभावनाए प्रमुख थे।

आर. भार्गव – (2013) ने राजस्थान में अध्ययनरत व्यावसायिक शिक्षा के छात्रों की व्यावसायिक रूचि तथा उनकी कठिनाईयों का अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला कि अधिकांश छात्र व्यावसायिक रूचि तो रखते थे, परनतु उनके सम्मुख योग्य प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, वित्तीय संसाधनों का अभाव, उचित मार्गदर्शन का अभाव सदृश सामान्य कमियाँ पाई गई।

आर.एस. – (2014) इनहोंने प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक रूचियों का विश्लेषण किया, तथा पाया कि शहरी और ग्रामीण शिक्षक–शिक्षिकाओं की रूचियाँ

शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च थी, दोनों वर्ग में विज्ञान के प्रति समान रूचि थी, किन्तु शिक्षिकाओं में साहित्य के प्रति अपेक्षाकृत अधिक थी। ग्रामीण शिक्षिकाओं ने शहरी शिक्षिकाओं की तुलना में अध्ययन में अधिक रूचि प्रदर्शित की।

एस. सरस्वती – (2016) ने कक्षा 10वीं के 400 छात्रों पर अध्ययन किया कि क्या व्यक्तित्व की विधाएँ व्यावसायिक रूचि से सम्बद्ध होती है? इन्होंने निष्कर्ष में पाया की छात्रों की व्यावसायिक रूचियाँ उनकी शैक्षिक रूचियों से सम्बन्धित नहीं होती है, तथा व्यावसायिक रूचियों और व्यक्तित्व की विधाओं का परस्पर सम्बन्ध नहीं होता।

श्रीमती सरोज व्यास – (2016) ने 9वीं कक्षा के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का मानसिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि पब्लिक स्कूल के शत प्रतिशत छात्र प्रतिभाशाली थे जबकि केन्द्रीय विद्यालय के छात्र उच्च से औसत बुद्धि लब्धि वाले थे। राजकीय विद्यालय के छात्र सामान्य से निम्न और मन्दबुद्धि वाले थे, उच्च और प्रतिभाशाली छात्रों ने वैज्ञानिक, प्रशासनिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में 90: बुद्धिलब्धि वाले, कलात्मक क्षेत्रों में 74% से 90% तथा औसत और निम्नबुद्धि वाले, साहित्यक और अनुनयात्मक क्षेत्रों में 60% छात्रों ने अपनी रूचि प्रदर्शित की। इन्होंने निष्कर्ष दिया कि बुद्धि लब्धि में विशेष अन्तर नहीं है।

शोध परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक रूचि के दस पक्षों को सम्मिलित किया गया है तथा परिकल्पनाएँ हर पक्ष से संबंधित बनाई गई हैं। प्रस्तुत अध्ययन में बनायी गई अमान्य परिकल्पनाओं का सांख्यिकी का प्रयोग करके परीक्षण किया गया है। परिकल्पना दो भागों में विभाजित की गई है।

1. व्यावसायिक रूचि के विभिन्न पक्षों एवं बुद्धि के मध्य सहसंबंध प्रदर्शित करने वाली।
2. छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रूचि के विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक अध्ययन प्रदर्शित करने वाली।

ये परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं :–

बुद्धि का व्यावसायिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

1. बुद्धि का साहित्यिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. बुद्धि का वैज्ञानिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
3. बुद्धि का प्रशासनिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
4. बुद्धि का वाणिज्यिक रूचि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।
5. बुद्धि का रचनात्मक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
6. बुद्धि का कलात्मक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
7. बुद्धि का कृषि कार्य रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
8. बुद्धि का प्रेरक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
9. बुद्धि का सामाजिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
10. बुद्धि का गृहकार्य रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में कोई कोई अन्तर नहीं होता है।

1. छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. छात्र एवं छात्राओं की प्रशासनिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
4. छात्र एवं छात्राओं की वाणिज्यिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
5. छात्र एवं छात्राओं की रचनात्मक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
6. छात्र एवं छात्राओं की कलात्मक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
7. छात्र एवं छात्राओं की कृषि कार्य रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
8. छात्र एवं छात्राओं की प्रेरक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
9. छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
10. छात्र एवं छात्राओं की गृहकार्य रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श चयन

प्रस्तुत अध्ययन में स्तरीकृत याद्रच्छिकी न्यादर्श द्वारा न्यादर्श चयन दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर दिल्ली के सरकारी उच्चतर माध्यमिक बालक और बालिका विद्यालयों का चयन किया गया दूसरे स्तर पर एक वर्ग के ग्यारहवीं कक्षा के वर्गों का चयन किया गया तथा एक वर्ग के उपस्थित सभी छात्र छात्राओं को अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

सर्वप्रथम दक्षिणी दिल्ली में स्थित सभी सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की सूची उपशिक्षा निदेशक, वसंत विहार दिल्ली के कार्यालय से प्राप्त की गई। तथा उन्हें अपने शोध निर्देशक के परामर्श से, जिन्होंने अध्ययन के परिवेश, परीक्षा, परिणाम तथा विद्यालय में उपस्थिति सुविधाओं के आधार पर विद्यालयों को सूचीबद्ध किया। कुल 06 विद्यालयों को चुना गया (3 बालक + 3 बालिका विद्यालय) जिनमें यादृच्छिक चार उत्तम, तीन मध्यम तथा निम्न विद्यालय चुने गये। दूसरे स्तर पर चुने गये विद्यालयों से ग्यारहवीं कक्षाओं के वर्ग का चयन किया गया।

इस प्रकार कुल 06 विद्यालयों में 210 छात्र–छात्राओं को प्रश्नावली दी गई जिसमें 200 सही एवं पूर्ण रूप से भरे हुए पाए गए।

उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. एस. एस. जलोटा द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण।
2. डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र। सन् 1972 सामान्य मानसिक योग्यता सामूहिक परीक्षण।

एस. एस. जलोटा

इस परीक्षण में कुल सामूहिक 100 प्रश्न हैं तथा परीक्षण को पूरा करने का कुल समय केवल 20 मिनट है। बुद्धि का यह परीक्षण सामूहिक और शाब्दिक बुद्धि परीक्षण है। इस परीक्षण के कुल प्रश्न सात विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित है। समान शब्द–भण्डार, विपरीत शब्द–भण्डार, श्रेष्ठ प्रत्युत्तर, अनुमान, सादृश्य, वर्गीकरण, संख्या श्रृंखला। पहले 4 क्षेत्रों से संबंधित 10–10 प्रश्न हैं तथा अन्तिम 3 क्षेत्रों से सम्बन्धित 20–20 प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के सही प्रत्युत्तर के लिए प्रयोज्य को एक अंक दिया जाता है। इस परीक्षण का उपयोग आठवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों (जिनकी आयु 11 से 16 वर्ष है) पर किया जाता है। इस परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक 938 है।

व्यावसायिक रूचि प्रपत्र

व्यावसायिक रूचि प्रपत्र का विकास पहली बार 1965 में किया। उसके पश्चात् 1970, 1975 एवं 1977 में इसका पुनरीक्षण किया गया है। अबतक लगभग 250 अनुसंधान कार्यों में इस मानक का प्रयोग किया गया है। स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मनोविज्ञान एवं शिक्षा आदि विषयों से संबंधित कार्यों को संपादित करने के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में इस मानक का प्रयोग लगातार किया गया है। विषय निर्देशन के क्षेत्र में भी छात्रों के अभिरूचि परीक्षण एवं उनमें उपस्थित मात्रा की खोज के लिए भी मानक सफल सिद्ध हुआ है। इनमें 250 व्यवसायों को दस क्षेत्र में वर्गीकृत किया गया है। इस प्रपत्र के निर्माता डी.ए.वी. कॉलेज के व्याख्याता ''डॉ एस. पी. कुलश्रेष्ठ'' हैं।

विश्वसनीयता

इस क्षेत्र में किए गए परीक्षणों पुनरीक्षणों आदि की लब्धि 15 दिनों के अन्तराल में 69 प्राप्त हैं।

प्रामाणिकता (वैधता)

1. प्रारंभ में (केवल उच्चरूप से वैध विषयों को चयनित किया गया) थर्सटन के Interest Schedule Strong's Vocational Interest Blank एवं Kuder's Preference Record आदि से उच्चस्तरीय प्रामाणिक विषयों को ही चयनित किया गया।
2. छात्रों की अभिरूचि का प्राप्तांक उनके अभिभावकों, शिक्षकों एवं मित्रों को विचारों से प्रभावित या समान सूत्र से संबंधित थे और उनकी प्रामाणिकता की उपलब्धि क्रमशः 81, 63 एवं 65 पाए गए।
3. यदि प्रपत्र को लाभ सिंह के व्यावसायिक रूचि सूची के आधार पर प्रमाणित किया जाता है तो प्रामाणिकता की लब्धि 74 पायी जाती है।
4. छात्रों के उपलब्धियों की तुलना जब सुझाव के अनुरूप किए गए अध्ययन के फल से की जाती है तो उसके तुलनात्मक लब्धि 80 प्राप्त होती है जो 01 स्तर पर भी व्यावहारिक एवं महत्वपूर्ण है।

सांख्यिकीय विधि

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में जिन सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है वे निम्नलिखित हैं :–

सहसम्बन्ध (CORRELATION)

$$r = \frac{\sum X^1 Y^1}{N} - CY \, x \, CX$$
$$\overline{\qquad\qquad}$$
$$QY \, x \, QX$$

मध्यमान

$$\sum \frac{FX}{N}$$

मानक विचलन

$$S.D. \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - \left(\sum \frac{Fd}{N}\right)^2} \;\; x \, I$$

विचलन की प्रामाणिक त्रुटि

$$S.D. \sqrt{\frac{Q1^2}{N1} + \frac{Q2^2}{N2}}$$

$$= \sqrt{\frac{01^2}{N} + \frac{02^2}{N2}}$$

क्रांतिक निष्पत्ति

$$C.R. = \frac{M1 - M2}{S.E.D.}$$

परिणाम एवं व्याख्या

1. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं साहित्यिक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.044) .05 स्तर पर सार्थक है।
2. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं वैज्ञानिक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.064) .01 स्तर पर सार्थक है।
3. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं प्रशासनिक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.050) .01 स्तर पर सार्थक है।
4. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं वाणिज्यिक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.074) .01 स्तर पर सार्थक है।
5. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं रचनात्मक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.044) .05 स्तर पर सार्थक है।
6. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं कलात्मक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.199) .01 स्तर पर सार्थक है।

7. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं कृषि कार्य रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है (r=0.005) .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
8. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं प्रेरक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है (r=0.025) .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
9. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं सामाजिक रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.064) .01 स्तर पर सार्थक है।
10. छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर एवं गार्हस्थ्य रूचि के मध्य सार्थक सहसंबंध है (r=0.076) .01 स्तर पर सार्थक है।

1. छात्र एवं छात्राओं के साहित्यिक रूचि का मध्यमान 8.33 व 8.05 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति .472 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
2. छात्र एवं छात्राओं के वैज्ञानिक रूचि का मध्यमान . 8.95 व 9.22 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति .27 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
3. छात्र एवं छात्राओं के प्रशासनिक रूचि का मध्यमान 12.13 व 11.80 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति .05 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
4. छात्र एवं छात्राओं के वाणिज्यिक रूचि का मध्यमान 8.38 व 7.57 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.36 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
5. छात्र एवं छात्राओं के रचनात्मक रूचि का मध्यमान 4.42 व 5.32 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.63 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
6. छात्र एवं छात्राओं के कलात्मक रूचि का मध्यमान 9.82 व 10.72 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.37 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
7. छात्र एवं छात्राओं के कृषिकार्य रूचि का मध्यमान 7. 09 व 6.64 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति .672 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
8. छात्र एवं छात्राओं के प्रेरक रूचि का मध्यमान 10.39 व 10.51 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति .188 है जो कि . 05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
9. छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक रूचि का मध्यमान 12.16 व 12.25 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 1.48 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
10. छात्र एवं छात्राओं के गार्हस्थ्य रूचि का मध्यमान 8. 05 व 11.65 है जबकि क्रांतिक निष्पत्ति 6.04 है जो कि .05 स्तर पर सार्थक है।

व्याख्या

1. बुद्धि का साहित्यिक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
2. बुद्धि का वैज्ञानिक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
3. बुद्धि का प्रशासनिक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
4. बुद्धि का वाणिज्यिक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
5. बुद्धि का रचनात्मक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
6. बुद्धि का कलात्मक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
7. बुद्धि का कृषिकार्य रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
8. बुद्धि का प्रेरक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
9. बुद्धि का सामाजिक रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।
10. बुद्धि का गार्हस्थ्य रूचि के साथ सार्थक सम्बन्ध है।

1. छात्र एवं छात्राओं के साहित्यक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. छात्र एवं छात्राओं के वैज्ञानिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. छात्र एवं छात्राओं के प्रशासनिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
4. छात्र एवं छात्राओं के वाणिज्यिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
5. छात्र एवं छात्राओं के रचनात्मक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
6. छात्र एवं छात्राओं के कलात्मक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
7. छात्र एवं छात्राओं के कृषिकार्य रूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
8. छात्र एवं छात्राओं के प्रेरक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
9. छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
10. छात्र एवं छात्राओं के गृहकार्य रूचि में सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्ष

व्यावसायिक जीवन का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सर्वाधिक महत्त्व होता है, किसी भी व्यवसाय में रोजगार प्राप्त किए बिना अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते और आवश्यकताओं की पूर्ति के अभाव में व्यक्ति का अस्तित्व कितने दिन तक रह सकता है यह स्वतः ही विचारणीय है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि जीवन और धन, जीवन के स्वरूप व व्यवसाय के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से गहन सम्बन्ध होता है।

छात्रों के जीवन के व्यावसायिक क्षेत्र में सहायता करने के उत्तरदायित्व का निर्वहन विद्यालयों को करना चाहिए। हमारा रोजगार जीविकोपार्जन के माध्यममात्र नहीं यह जीवन जीने का एक तरीका भी है यही समाज में हमारी भूमिका को निर्धारित करती है।

व्यवसायजनित मार्गदर्शन की शुरूआत विद्यालयी शिक्षा के साथ ही होनी चाहिए। क्योंकि उस स्तर पर कोई भी छात्र प्रायः अपने व्यवसाय को निर्धारित नहीं किए होते हैं।

व्यवसाय चयन छात्रों के ज्ञानार्जन, समझ, कलात्मक रूझान आदि विषयों से घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हुए हैं। जिन विद्यालयों में इस कार्यक्रम का अभाव है वहाँ प्रायः ऐसे विषयों का छात्र चयन कर लेते हैं जिसका उसके व्यावसायिक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता है और जब उन लोगों के सामने व्यवसाय चयन की समस्या आती है तो वे पाते हैं कि उनके द्वारा पठित विषयों का संबंध उनके विषय से नहीं है, तब वे बहुत ही अफसोस करते हैं। उन्हें यह सोचकर पश्चाताप होता है कि उनके

व्यवसाय में उनके द्वारा पठित विषयों का कोई योगदान नहीं है।

अतः व्यावसायिक कार्यक्रम को शिक्षा के हर स्तर पर सम्मिलित किया जाना चाहिए।

व्यावसायिक एवं शैक्षणिक मार्गदर्शन एवं परामर्श के द्वारा अभिरूचि अध्ययन के क्षेत्र में काफी गति मिला है। व्यावसायिक चयन एवं वर्गीकरण के द्वारा परीक्षण विकास को भी अधिक प्रेरित किया गया है। व्यावसायिक क्षेत्र में काम करने वाले एवं उन्हें नियुक्त करने वाले दोनों के विचारों में व्यक्तिगत अभिरूचि का व्यावहारिक महत्त्व है। इसके लिए प्रत्यक्ष पूछताछ पद्धति की यथार्थता, अविश्वसनीयता आदि को ध्यान में रखते हुए अप्रत्यक्ष पद्धतियों का प्रयोग किया गया है एवं इसके लिए अनेकानेक अभिरूचि, मानकसूची का विकास किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता तभी संभव हे जब इसमें दिए गए सुझावों का शिक्षकों अभिभावकों एवं प्रशासकों द्वारा अनुपालन किया जाय तभी इस शोधकार्य का उद्देश्य सफल होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अस्थाना, विपिन, 1999 मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकन श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा – 2

माथुर, एस के, 2013, शिक्षा मनोविज्ञान विनो द पुस्तक मंदिर, आगरा

भार्गव महेश, 1990, आधुनिक मनो वैज्ञानिक एवं मापन, कचहरी, आगरा

शर्मा रमा एंव मिश्रा एम के, 2009 हिन्दी शिक्षण, अर्जुन पब्लिक शिक्षा हाउस, नई दिल्ली

सिंह, अरुण कुमार, 2013, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसी हाउस, दिल्ली

पाठक, पी.डी. 2009, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा ।

सिंह, अरूण कुमार उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान पेज नं–753 से 754

बुच एम. बी. (1972, 1978), "सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन" पृष्ठ 46–52

गाडनर जे. एस. (1940), "दी वुस ऑफ टर्म लेबल ऑफ एसपीरेशन सायलॉजिकल रिव्यू", पृष्ठ 59–68।

गोड़ एच.सी. (1973), दिल्ली के विद्यालय के छात्रों की "व्यवसायिक आकांक्षाओं कों प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", शोध आई. आई टी, न्यू दिल्ली।

घोष, एच. सी. (1974), किसी भी रचनात्मक आत्मकथा के अध्ययन को भारतीय स्कूलों में परामर्श की पद्धति बनाना, शोध प्रबंध कलकत्ता विश्वविद्यालय।

ग्रेवाल जे. एस. (1990), "व्यवसायिक वातावरण और शैक्षिक और व्यवसायिक पसंद" नेशनल सॉयकलाजिकल रिव्यू (आगरा)।

सिंह गुमान साहू (1997) "उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" पं .रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर।

ए.बी.जे.ओ. (1970) नाइजिरियन किशोरों का शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड वोकेशनल मेजरमेंण्ट– 462 अगस्त वाल्यूम 4/1 पेज 55–67।

गुप्ता, एम.पी., गुप्ता, ममता (2009):– शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, राखी प्रकाशन आगरा।

खुवेद और खॉन, रहमान (2007) :– दिल्ली के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।